IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विभिन्न देश–भाषाओं में रामकथा साहित्य का परिचय

डॉ सत्यनारायण हेच के

सहायक हिन्दी आचार्य

हिन्दी विभाग

मद्रास संस्कृत महाविद्यालय, मैलापुर, चेन्नै, भारत

विभिन्न देश–भाषाओं में रामकथा साहित्य का परिचय

कई शताब्दियों तक मौखिक रूपमें या वाक्–परंपरासे बहता हुआ, विभिन्न परंपराओंके आधारपर लिखितरूपको प्राप्त रामायण भी अन्य विकासशील महाकाव्योंकी भाँति अवस्था–अंतर–बदलावसे प्रेरित होकर अपने मूल–आकारसे बढ़कर विशाल ग्रंथका रूप पाकर आज हमारे सामने विद्यमान है।

वाल्मीकि लिखित रामायणको ही रामायणकी सर्वप्रथम कृति मानी जाती है। लगभग 24,000 श्लोकोंका, सात काण्डोंमें विभक्त यह महाकाव्य वाल्मीकि तथा नारदके संवादके साथ प्रारंभ होता है। दरअसल वाल्मीकि रामायणकी मूलकथा युद्धकाण्डके अंतमें समाप्त हो जाती है। उत्तरकाण्ड परवर्ती रचना मानी जाती है। इसके तीन पाठ उपलब्ध हैं। तीनों पाठोंकी तुलना करे तो कुछ भिन्नता अवश्य दिखती है। इन पाठान्तरोंका मुख्य कारण डा0 कामिल बुल्केने ''प्रारंभिक कालमें वाल्मीकीय रामायणके मौखिक रूपसे प्रचलन'' बताया है। ये तीन पाठ भेद हैं 1. दाक्षिणात्य 2. गौडीय तथा 3. पश्चिमोत्तरीय। इसका रचनाकाल डा0 बुल्केके अनुसार 300–400 वर्ष ईसा पूर्व है। याकोबी तथा विंटरनित्सने इसका रचनाकाल ईसाकी दूसरी सदी माना है। वाल्मीकि रामायण पर अगणित टीकाएँ हुई हैं जिनमें नागेशभट्टका रामायणतिलक, गोविंदराजका रामायण भूषणाख्य, शिवसहायकी रामायण–शिरोमणि व्याख्या, माहेश्वरतीर्थकी तीर्थव्याख्या या तत्वदीप जैसी प्राचीन टीकाएँ प्रसिद्ध हैं।

कविकुलगुरू कालिदास विरचित उन्नीस सर्गों का रघुवंश महाकाव्य मूल वाल्मीकि रामायणके आधार पर ही है। कुछ विद्वानोंने इसका रचनाकाल ईसाई पूर्व 400 माना है। मगर अभीतक इसका काल निश्चित नहीं हुआ है। इसमें रामकी कथा नौवें सर्गसे लेकर सोलहवाँ सर्गतक व्याप्त है।

वाल्मीकि रामायणके अभीतक प्राप्त हस्तप्रतियोंमें सबसे पुरानी हस्तप्रति विक्रम संवत् 1076 (ई.सन् 1020) की मानी जाती है। यह हस्तप्रति नेवारी लिपिमें है और काठमंडुके बीर ग्रंथालयमें सुरक्षित रखा गया है। इसमें सभी काण्ड हैं। मगर किष्किंधाकाण्डकी समाप्ति केवल श्लोकार्धमें होकर सुंदरकाण्डका आरंभ शेष श्लोकार्धमें होता है। किष्किंधाकाण्डमें लिखा गया है –'इसे संवत् 1076 में प्रतिलिपित किया गया'। यह प्रतिलिपि पटक निवासी कायस्थ पण्डित श्री गोपति द्वारा नेपाल देशके भाण्डसालिक आनंदकेलिए कीगयी और उस समय तिरभुक्तिका शासन महाराजाधिराज श्री गांगयदेव कर रहेथे। अन्य काण्डोंकी प्रतिलिपि किसने और कब किया यह मालूम नहीं है।

मराठी प्राकृत भाषाकी प्रसिद्ध अनूदित पंद्रह सर्गीय कृति 'सेतुबंध' या 'रावणवध'के रचयिता हैं पाँचवीं शताब्दीके वकाटक राजा प्रवरसेन। सातवीं शताब्दीके प्रथम चरणमें महाकवि भट्टिने व्याकरणिक नियमोंको निरूपित करनेकेलिए बाईस सर्गवाले 'रावणवध'की रचना की। रामकथा संबंधी महाकाव्योंकी परम्परामें नवीन युगका प्रारंभ सन् 700–800 में कुमारदासने

किया जिन्होंने अपनी 'जानकीहरण' कृतिमें श्रृंगार रसको प्रधानता दीथी। इसका हिन्दीमें अनुवाद पंडित ब्रजमोहनने किया था। लगभग 9वीं सदीके पूर्वार्धमें अभिनन्दने 36 सर्गवाले 'रामचरित'की रचना की।

11वीं सदीमें काश्मीरी कवि क्षेमेन्द्रने 'रामायण मंजरी' और 'दशावतार चरितम्'की रचना की। इसके सातवें सर्गमें रामावतारका बडा सरस वर्णन है। इसमें रामको एक अवतार माननेका प्रयास कियागया है। भारतीय दर्शनशास्त्र तथा अध्यात्मविद्याको संवादात्मक रूपमें बतानेवाला ग्रंथ है 'योगवासिष्ठ–रामायण'। डा0 राघवनके अनुसार इसका रचनाकाल सन् 1100–1225 के बीच है और एम् विंटरनित्स और एन.एन. दासगुप्ताके अनुसार 8वीं सदी है। इसमें रामावतारके चार कारण बताये गये हैं – 1. सनत्कुमारशाप 2. भृगुशाप 3. वृंदाशाप और 4. देवशर्मा ब्राह्मणशाप। 12वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें धनंजय द्वारा 'राघवपाण्डवीय' और शताब्दीके उत्तरार्धमें संध्याकरनन्दी द्वारा 'रामचरित'की रचनाएँ हुईं। उसी शताब्दीके उत्तरार्धमें कविराज पण्डितने 'राघव पाण्डवीय'की रचना की। इसमें रामके ईश्वरत्वका वर्णन है। उसके बाद 13वीं सदीमें हरिदत्तसूरिने 'राघव नैषधीय'की, 14वीं सदीके मध्यभागमें कवि साकल्यमल्लने 'उदारराघव'की रचनाएँ की। उसी शताब्दीमें किसी अज्ञात दार्शनिक कवि द्वारा 'अध्यात्म रामायण'की रचना हुई।

मुरारिका 'अनर्घराघव', राजषेखरका 'बालरामायण', भवभूतिका 'उत्तररामचरित', भास कविका 'प्रतिमानाटकं' एवं 'अभिषेकनाटकं', जयदेवकृत 'प्रसन्नराघव', रामभद्र दीक्षितका 'जानकीपरिणय', यशोवर्मन्का 'रामाभ्युदय' आदि कृतियाँ रामकथा सम्बंधी नाटक–साहित्यकी प्रमुख रचनाएँ मानी जाती हैं।

असमिया रामायण : क़रीब ई.सन् 1400 के आसपास असमके नौगाँवमें जन्मे माधव कन्दलीके रामायणको असमिया भाषाका सबसे पहला रामायण माना जाता है। पूरी तरह लोक–व्यवहारसे भरा यह रामायण वाल्मीकि रामायाणकी संक्षेप कथा है। उन्होंने किसी बराही राजा महामाणिक्यके अनुरोध पर यह रामायण लिखा था। लेकिन उसके केवल 5 काण्ड ही उपलब्ध हैं, आदि और अन्त उपलब्ध नहीं है। माना जाता है कि असमके श्रेष्ठ भक्त संत शंकरदेवने स्वयं उत्तरकाण्ड लिखकर इसमें जोड दिया अैर उनके शिष्य माधवदेवने आदिकाण्ड लिखा।

बंगला रामायण : बंगलाके सबसे पुराने उपलब्ध रामायणके लेखक हैं पण्डित कृत्तिवास ओझा जिनका जन्म लगभग सन् 1450 में फुलिया गाँवमें हुआ था। ईस्ट इंडिया कंपनीके कर्मचारियोंको बांगला सिखाने केलिए श्रीरामपुरके मिशनरी प्रेसने इस बांगला रामायणका प्रथम संस्करण 1802–03 में प्रकाशित किया।

ओड़िया रामायण : ओडियाके मन्दिरोंकी दीवारोंपर रामकथाके दृश्य अंकित हैं। ईसापूर्वके 'राणी–गुंफा'के एक बड़े फलकपर मारीच वधका दृश्य है। सन् 1510 में बलरामदासने ओड़िया भाषामें रामायण लिखा।

मराठी रामायण : मराठी भाषामें 'भावार्थ रामायण'की रचना संत एकनाथने (सन् 1533–1599) की थी। युद्धकाण्डके कुछ भागतक इन्होंने लिखा, बीचमें इनकी मृत्यु हो जानेके कारण इनके शिष्य गावबाने इसे पूरा किया। यद्यपि महाराष्ट्रकी परम्परामें वैदिक रामकाव्य और जैन रामायणोंका प्रचार बहुत पहलेसे है, मगर रामभक्ति सम्प्रदायकी शुरुआत यहाँसे हुई थी।

मैथिलीय रामायण : मैथिली भाषामें रामायणकी सबसे पुरानी एक हस्तप्रति उपलब्ध है। लक्ष्मण संवत् 241 (ई.सन् 1360) की यह हस्तप्रति दर्भांगा पैलेस ग्रंथालयमें है।

गुजराती रामायण : गुजरातमें रामायणकी कथा पहलेसे ही प्रचारमें था, लेकिन रामायण लिखनेकी प्रथा कृष्णभक्तिके प्रचारके बाद आयी। यहाँका प्रतिनिधि रामायण 'गिरधर रामायण' पंडित गिरधर द्वारा सन् 1835 में लिखा गया था। ये वल्लभ सम्प्रदायके थे।

पंजाबी रामायण : पंजाबके गुरु गोविन्द सिंहने 'रामावतार' नामक काव्य लिखा था। मगर वह ब्रजभाषामें है। पंजाबी भाषाका फारसी लिपिमें सन् 1940–46 के बीच रामलुभाया अणद दिलषाद द्वारा लिखित 'पंजाबी रामायण'को विश्वबन्धुने नागरी लिपिमें प्रकाशित किया था।

तेलुगु रामायण : तेलुगुके 'द्विपद रामायण'की रचना 13वीं शतीमें गोन बुद्धा रेड्डी द्वारा दोहा जैसे द्विपद छन्दमें कीगयी थी। इसमें मात्र छह काण्ड हैं।

कन्नड रामायण : कन्नड भाषामें 12वीं शतीमें नागचन्द्रने 'पम्प रामायण'की रचना की थी। यह पूरी तरह जैनधर्मसे प्रभावित है। वाल्मीकि परम्परामें कन्नडका प्रथम रामायण कवि नरहरि द्वारा 15–16वीं शतीमें लिखा गया। कवि बिजापुरके तोरवे गाँवके रहनेवाले थे, इसलिए उनकी रामायण कृतिका नाम 'तोरवे रामायण' पडा। इसमें उत्तरकाण्ड नहीं है। इसपर वैष्णव भक्तिका गहरा प्रभाव दिखता है। यहाँ रामको अवतारपुरुष माना गया है।

तमिल रामायण : तमिलनाडूमें रामकथा काव्यकी शुरुआत कविचक्रवर्ती कम्बन्ने की। ये तंजावूरके रहनेवाले थे। इनका काल 9वीं शती बतायी जाती है। यह 10,500 पदोंका एक विशाल काव्य है। यह रामायण तत्कालीन राजा कुलोत्तुंग चोळन्के अनुरोधपर लिखा गया। भारतके तीन श्रेष्ठ रामकाव्योंमें यह भी एक है। अन्य दो हैं रामचरितमानस और तेलुगुका रंगनाथ रामायण।

मलयाळ रामायण : मलयालमका प्रसिद्ध रामायण है 'अध्यात्म रामायण'। महाकवि तुंचतु रामानुज एळुत्तच्चन् इसके लेखक हैं। वे 16वीं शतीमें एक शूद्र जातिमें पैदा हुए थे। पण्डितोंके युगमें एक शूद्र द्वारा रामकाव्य लिखना एक क्रान्ति ही थी। अध्यात्म रामायण 'मणिप्रवाल शैली'में (संस्कृत–मलयालम या संस्कृत–तमिल की मिश्रित भाषाको मणिप्रवाल शैली कहते हैं) लिखी गयी कृति है। मलयालमका और एक रामायण है 'रामचरित'।

नेपाली रामायण : नेपालके रमधा नामक गाँवके उपाध्याय कुलमें सन् 1814 में जन्मे नेपाली भाषाके प्रथम एवं श्रेष्ठकवि माने जानेवाले श्री भानुभक्तने अपनी कृति 'भानुभक्तको रामायण'का अधिकांश भाग जेलमें रहते समय रचा। नेपालके जनमानसमें यह इतनी सुप्रचारित है कि विवाहके समय इसके छन्द गाये जाते हैं। तुलसी रामायण और अध्यात्म रामायणका इस पर प्रभाव दिखता है। कविकी मृत्यु 1868 में हुई।

तिब्बती रामायण : तिब्बतीकी शुरुआती रामकथामें 'अनामकं जातकम्' और 'दषरथकथानम्' नामक बौद्ध ग्रंथोंका प्रभाव रहा। इसका काल सन् 800–900 के मध्य बताया जाता है।

मलय रामायण : मलय/मलयु रामायण या जावा रामायण 'हिकायत सेरी राम'की रचना ईसाई 13 से 17वीं शताब्दीके मध्य हुई। इसमें इस्लाम धर्मका रंग अधिक दिखता है। मलय रामायणकी अबतककी सबसे पुरानी हस्तप्रति ब्राडलेइअन ग्रंथालयमें (1633 में रखी गयी) उपलब्ध है। तब मलय साहित्यमें इस्लामिक धर्मका चरमकाल था। यह अरेबिक लिपिमें है। मलय भाषाके क़रीब 25 रामायण संबंधी कृतियोंमें केवल 3 हस्तप्रतियोंको ही विद्वानोंने अध्ययन किया है, शेष हस्तप्रतियाँ अभीतक अछूत हैं। प्रकाशित हस्तप्रतियाँ हैं, 1. रुर्दा वान एसिंगा (1843), 2. शेल्लाबिअर (1915 में प्रकाशित) और मैक्सवेल। 'राम क्लिंग', 'सेरत् कण्ड' आदि भी वहाँके कुछ अन्य रामायण हैं। 'सेरत् कण्ड'में हिन्दू, मुसलमान और ईसाई देवताएँ भी आती हैं।

कम्बोडियन रामायण : कम्बोडिया (कम्बुज/कम्बोज)की महत्वपूर्ण रामकथा 'रामकेर्ति' ई. 15–16वीं शतीकी मानी जाती है। इसपर बौद्धधर्मका काफी प्रभाव है। इसमें नारायण और बोधिसत्वको एक ही बताये गये हैं। बुद्ध ही रामका अवतार लेकर वनमें बौद्ध मुनियोंसे मिलते हैं। वहाँकी प्राचीन राजधानी अंगकोरवाट्के 11–12वीं शताब्दीके मन्दिरोंमें रामायणकी कथाएँ चित्रशैलीमें हैं। छठीं शताब्दीके काम्बोजके शिलाशासनमें रामकथाकी एक प्रतिलिपिको त्रिभुवनेश्वर स्वामीके सम्मुख पठन करनेकी प्रथाके बारेमें लिखा गया है। सातवीं सदीके कोम्पा शिलाशासनमें कहा गया है कि प्रकाशधर्म नामक राजाने एक देवालयमें वाल्मीकिकी मूर्ति स्थापित की थी।

इण्डोनेशियाई रामायण : इण्डोनेशियाके मुख्य द्वीपोंमें जावा (यव) भी एक है। संस्कृत साहित्यमें यह सुवर्ण द्वीपसे ख्यात है "सुवर्णरूप्यकद्वीपं सुवर्णाकरमण्डितम्"। वाल्मीकि रामायणमें 'यव द्वीप'का उल्लेख है। किष्किंधाकाण्डके 40वाँ सर्गके 30वें श्लोकमें इसका वर्णन है –

यत्नवन्तो यवद्वीपं सप्तराज्योपशोभितम्।
सुवर्णरूप्यकद्वीपं सुवर्णकरमण्डितम्।।
यवद्वीपमतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वतः।
दिवं स्पृशति श्रृंगेण देवदानवसेवितः।।

(वा.कि.का.30,31)

मध्य जावाके जोग जकार्ता नगरके परमवनन नामक स्थानपर स्थित 9वीं सदीके एक शिवमन्दिरकी दीवारोंपर मूल वाल्मीकि रामायणकी कथाएँ चित्रित हैं। इसी तरह पूर्वी जावाके पनतरन नामक स्थानके शिवमन्दिरमें भी रामकथा चित्रित है। ईसाई 898–930में वाल्मीकि रामायण और भट्टिकाव्यको आधार बनाकर रचा गया जावा द्वीपका रामायण 'ककविन्' वहाँका

अधिकृत रामायण कहलाया जाता है। इसे जावाकी प्राचीन लोकभाषामें लिखागया है। इसके लेखक महाकवि म्पू–योगीश्वर मानेगये हैं। 26 सर्गवाले इस रामायणमें कुल 2778 श्लोक हैं। इसमें गद्यरूपी उत्तरकाण्ड है, इसका छन्द मुख्यरूपसे संस्कृतके आर्या, शार्दूलविक्रीडित, मालिनी, वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, शिखरिणी आदि हैं। "ककविन्"की क़रीब नौ हजार ताडपत्रोंकी पाण्डुलिपियाँ जावाके उदयन विश्वविद्यालयमें संग्रहीत हैं। इसके अतिरिक्त लीडेन विश्वविद्यालय में भी कुछ पाण्डुलिपियोंका संग्रह है।

जावाकी और एक रचना 'प्रंभनन'में भी रामकी कथा मिलती है। 'सेरत–काण्ड' इण्डोनेशियाकी रामायण सम्बन्धी 15वीं शताब्दीकी एक रचना है जो इस्लाम धर्मसे पूरी तरह प्रभावित है। 5 सदियोंसे इस्लाम धर्मको अपनाये इण्डोनेशियाने 1971 में यूनेस्कोकी सहायतासे प्रथम 'अंतर–राष्ट्रिय रामायण'का आयोजन कर रामायणके मूलदेश भारतको मात दे दी थी।

जापानी रामायण : जापानमें 12वीं शतीमें लिखित एक रामकथा उपलब्ध है। इस रामकथामें रामको 'राजा शाक्यमुनि' बताया गया है। इसकी मूलकथा 'अनामकं जातकम्' नामक चीनी कथासे सम्बन्धित है।

थाईलैण्डीय रामायण : थाईलैण्ड (श्याम देश/अयुया)की रामकथा 'राम–कियेन' (रामकीर्ति या रामकीर्तन)की रचना ईसाई 1798में वहाँके राजा प्रथम रामने कीथी। वहाँके शासक अपने नामके साथ रामकी उपाधि जोड़ते हैं। जैसे शासक भूमिबल अतुल्य देज नवम राम। वहाँकी राजधानी बैंकाकके संग्रहालयके बाहर रामकी 18 फीट ऊँची कांस्य प्रतिमाकी स्थापना की गयी है।

तुर्किस्तानीय रामायण : पूर्वी तुर्किस्तान (खोतानी)की रामकथाका काल निश्चित नहीं हुआ है। खोतानी और तिब्बती रामकथाओंमें परिस्थितिवश रामको वनमें रहना पड़ता है, सौतेली माँके कारण नहीं। खोतानमें सम्पत्तिका बँटवारा रोकने केलिए सभी भाइयोंकी एक ही पत्नी हुआ करती थी। यह प्रथा रामकथापर थोप दीगयीहै। रामको बोधिसत्व कहा गया है और रावण अंतमें रामसे प्राण भिक्षा माँगकर बौद्ध बन जाता है।

चीनी रामायण : शायद पालिभाषासे चीनी भाषामें अनूदित रामकथा 'अनामकं जातकम्' अथवा 'अनामधेय राजाकी कथा'की रचना ईसाई सन् 251 में को–नो–ई नामक एक चीनी बौद्ध विद्वान्–मठाधीशने कीथी। इसका भारतीय मूलपाठ (रचनाकाल 100 ईसाई पूर्व) उपलब्ध नहीं है। चीनी त्रिपिटकमें 121 अवदानोंका एक संग्रह 'दशरथ कथानम्' अप्राप्य मूल भारतीयग्रंथ (रचनाकाल ई. 2 शती)का सन् 472का अनुवाद है।

मंगोलियाई रामायण : मंगोलियामें रामकथाका प्रचार तिब्बतीय लामाओंके द्वारा हुआ होगा। मंगोलियामें रामकी कथा 'जीवकका कथानक' नामसे जानी जाती है। इसका काल लगभग 18वीं शती मानी जाती है। मंगोलियामें 13वीं शतीके पण्डित आनन्दध्वजने एक 'सुभाषित' ग्रंथकी रचना की और बादमें उसकी तीन टीकाएँ लिखी गयीं। टीकाओंके अनुवाद मंगोलिया भाषामें कियेगये जिनमें रामकथाका संक्षिप्तरूप उपलब्ध है।

रूसी रामायण : रूसके साइबेरिया (षिविर)तक रामकथा पहुँची थी। हिमाच्छादित बुर्यात प्रदेशमें रामकथा कही–सुनी जाती है। सोवियत रूसकी मुख्य नदी वोल्गा तक रामकथा फैली हुई है। हाल्मिक गणराज्यमें रामकथा लोककथाके रूपमें प्रचारित है। आधुनिक रूसमें रामचरितमानसकी कथाका कई रूपोंमें प्रचार है।

लाओसी रामायण : लाओस (लवदेश)का भारत देशसे सम्बन्ध 2000 वर्ष पुराना है। वहाँ लवपुरी नामक नगर भी है। लाओसमें दो प्रकारकी रामकथाओंका प्रचार है पहली है फालक–फालामकी कथा (16वीं शती) और दूसरी थाई लू की रामायण। वहाँके लोगोंका विश्वास है कि जेतवनमें एकत्र हुए भिक्षुओंको बुद्धने रामकथा सुनायी थी।

फिलीपीन्सीय रामायण : इस द्वीपकी रामकथा 'महारादिया लावना' है और रचनाकाल 13–14वीं शती माना जाता है।

बर्मीय रामायण : ब्रह्मदेश (बर्मा या म्यान्मार)में रामकथा ईसापूर्व दूसरी शतीमें ही मौखिक रूपमें प्रचलित रहनेकी बात कही जाती है। लेकिन इसका गद्य साहित्यिक रूप 17वीं शतीमें 'रामबथ्थु' नामसे प्रचलित हुआ। यहाँपर बोधिसत्व रामके रूपमें अवतार लेते हैं। 18–19वीं शतीकी रचना 'थिरि रामनाट' गद्य–पद्य मिश्रित है और इसमें नारायण ही रामका अवतार लेते हैं। यह बौद्ध प्रभावसे मुक्त है।

सिंहली रामायण : सिंहलीय रामकथाकी कृति 'रामायण सन्देश' पाली भाषामें है। इसका रचनाकाल ईसाई 1400–1500के बीच मानागया है। लेकिन मौखिक रूपमें रामकथाका प्रचार उससे कई सदियों पहलेसे होनेकी अंदेशा कीजाती है।

इसके अलावा फीजी, श्रीविजयद्वीप (सुमात्रा), चम्पा (वियत्नाम), गुयाना, ट्रिनिडॉड, दक्षिण आफ्रीका, सूरीनाम, मारीषस, तुंजुंगपुर (बोर्नियॉ) आदि देशोंके रामायण भी प्रचलित हैं। लेकिन यहाँ सबका उल्लेख–विवरण प्रस्तुत करना मेरे वर्तमान प्रयाससे बाहर है। इस तरह रामकथाका प्रचार पूरे एशियाई देशोंमें सदियों पहले हुआ। इसके साथसाथ पश्चिमी देशोंमें भी रामकथासे सम्बंधित कई साहित्यिक रचनाएँ, अनूदित कृतियाँ रची गयीं। गंगोत्रीमें जन्मलेकर पावन गंगा प्रवाहित होती हुई सागर पहुँचनेसे पहले कई देश–प्रदेशोंकी मिट्टी, खनिजोंको अपनेमें समेटती चलती है। उसीतरह रामकथा भी कालान्तरमें देश–विदेशोंमें इसतरह बहगयी कि वह वहाँकी कला, संस्कृति, आचार–विचार, धर्म–विश्वास आदिको अपने अंदर समेटती हुई वहाँके साहित्यका एक अविभाज्य अंग बनकर विकसित होता गया।